CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

अ:3/81

थिरकवा

य-ग्रन्थालय
,करौंदी, वाराणसी-५
अ:3/81

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

અહમદ ગાળ પૈંડકવા

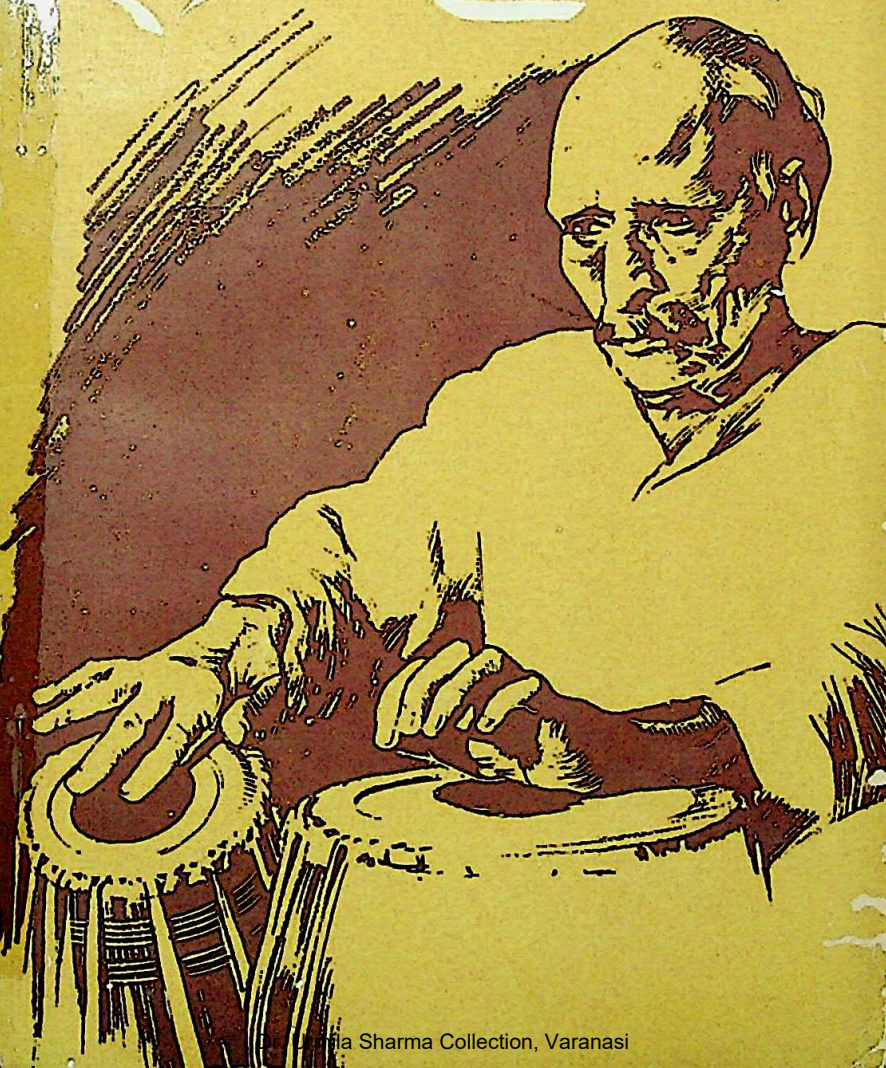

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करींदों
वाराणसी-5

अहमदाबाद

शिल्प

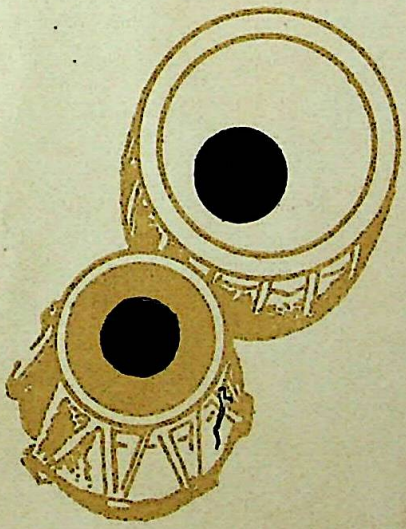

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न्याय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अ:3/81

विनाय-ग्रन्थालय,
भारतमिति, कबीरी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

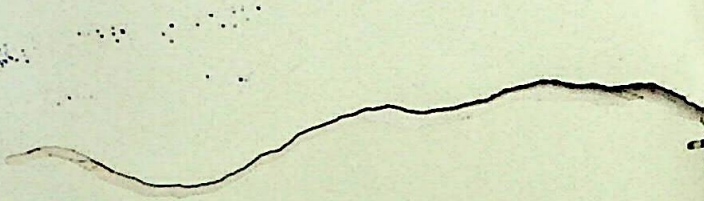

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

तबले पर लय के साथ नृत्य करतीं बालक की कोमल उँगलियों की थिरकन पर मुग्ध होकर एक बुजुर्गवार के मुँह से सहसा निकला, "वाह थिरकू" और यह एक ऐसा संयोग था कि आगे चल कर इसी आधार पर यह बालक भारत के संगीत-जगत् में "**थिरकवा**" के नाम से विख्यात हुआ। बुजुर्गवार थे, अहमद जान के आदर्श गुरू मुनीर खाँ के वालिद, उस्ताद काले खाँ, जिन्होंने अपने बेटे के तरुण शिष्य में कला का असाधारण चमत्कार देखकर यह नामकरण किया था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिक्षा-दीक्षा, रियाज़

तबले के जादूगर उस्ताद अहमद जान थिरकवा का जन्म मुरादाबाद के संगीतज्ञों के एक परिवार में हुआ था। बचपन में उस्ताद मिट्ठू खाँ से गायन सीखने के साथ उनकी संगीत-शिक्षा का समारम्भ हुआ। पिता हुसैन बख्श एक सुविख्यात सारंगीवादक थे। अतः उनसे कुछ समय तक इन्होंने सारंगी सीखी, लेकिन जैसा कि बाद में उन्होंने स्वयं उसे बताया :—

"इन सबके बावजूद कला के प्रति मेरा रुझान उस समय तक नहीं हुआ, जब तक मेरठ के महान् तबला-वादक, उस्ताद मुनीर खाँ को मैंने नहीं सुना। उनको सुनते ही सहसा मेरी समझ में आ गया कि मेरी 'रूह' वस्तुतः तबले में है। यूँ तो मैंने शुरू में अपने चाचाओं—शेर खाँ, फैयाज़ खाँ और बसवा खाँ से तबले की शिक्षा ग्रहण की थी, लेकिन मुनीर खाँ के रूप में जब मुझे एक आदर्श गुरू मिल गये और १२ वर्ष की उम्र में मैं उनका शागिर्द बन गया तभी से वास्तव में 'रियाज़' में मेरा मन लगा। मेरे उस्ताद मात्र एक महान् तबला-वादक ही नहीं थे अपितु एक उदार गुरू

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भी थे। वह प्रतिदिन मुझसे १६ घंटे अभ्यास कराते थे, बीच-बीच में कभी-कभी आधा घंटे का विश्राम देते थे, भोजनादि के लिए, और केवल ६ घंटे नींद के लिए। मुझे नियमित रूप से व्यायाम करना पड़ता था और काफी बड़ी मात्रा में पौष्टिक भोजन लेना पड़ता था, जो इतने कठिन रियाज़ के लिए ज़रूरी था।"

पालन-पोषण

अहमद जान का पालन-पोषण उनके भाई मिट्ठे जान खाँ ने किया था। उनके द्वारा थिरकवा साहब को भरपूर कला-साधना के लिए न केवल सभी प्रकार की अपेक्षित सुविधाएँ उपलब्ध की गयीं थीं; बल्कि उनके लिए ताकतवर कीमती खुराक और दूध का भी प्रबन्ध किया गया था। शायद इसी का यह प्रतिफल था कि जीवन के अन्तिम वर्ष तक उनमें एक साधक कलाकार का जीवट अखंड रूप से क़ायम रहा। जो हो, नवयुवक अहमद जान की असाधारण क्षमता, लगन और रियाज़ से मुनीर खाँ इतने प्रसन्न और प्रभावित हुए कि वह अल्पकाल ही में गुरू के स्नेहभाजन शिष्य बन गये। वैसे मुनीर खाँ के घराने में और कई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मशहूर तबलावादक हुए हैं—जैसे मुनीर खाँ के भतीजे उस्ताद अमीर हुसैन, गुलाम हुसैन, शमसुद्दीन, पी० नगेशकर, श्रीपाद नगेशकर, निखिल घोष, गुलाम रसूल आदि।

प्रशस्ति, प्रोत्साहन

बम्बई के खेतवादी के संगीत-सम्मेलन में थिरकवा साहब को १६ वर्ष की अवस्था में सर्वाधिक सफलता प्राप्त हुई थी। यहाँ के अपने प्रदर्शन की याद करके वे बहुत खुश होते थे। इस अवसर पर श्रोताओं की ओर से उच्च स्वर में तालियों के साथ उनकी जो प्रशस्ति हुई, उसकी गूँज उनके कानों में सदा समायी रही। बाल गंधर्व की थियेट्रिकल कम्पनी के सदस्य के रूप में उन्होंने व्यापक लोकप्रियता हासिल की। इसके बाद संगीत-सम्मेलनों के ढेरों निमंत्रण इन्हें मिलने लगे। उत्तर भारत के सबसे व्यस्त कलाकारों में उनकी गणना होने लगी।

रामपुर दरबार में

सन् १९३६ में वे रामपुर दरबार के संगीतज्ञ नियुक्त हुए और इस पद पर उन्होंने तीस वर्ष कार्य किया। इस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वीच उन्होंने अपने समय के बड़े से बड़े संगीतज्ञों को सुना और उनके साथ संगत की। अतः यह आश्चर्य की बात नहीं कि उनके पास राजाओं, नवाबों और दरबारी संगीतज्ञों की कथाओं का अक्षय भंडार हो गया था, जिन्हें वे अपनी निराली शैली में सुनाया करते थे। इन्हीं में से रामपुर के नवाब कल्बे अली खाँ का एक किस्सा था। नवाब कल्बे अली खाँ मँजे हुए संगीतज्ञ थे और थे संगीत के महान् संरक्षक। सुर-सिंगार में प्रवीण अपने गुरू बहादुर खाँ के प्रति उनमें प्रगाढ़ निष्ठा थी, जिससे दरबारियों और नवाब के सम्बन्धियों के दिल में भारी जलन पैदा हो गयी थी। नवाब साहब ने उन्हें एक दिन सबक सिखाने का निश्चय किया। अपने गुरू को दरबार-हॉल के बाहर बिठलवाया और सभी दरबारियों और शहजादों को ठीक दस बजे सबेरे आने का निमंत्रण दिया, लेकिन उस समय बहादुर खाँ का सुरसिंगार-वादन इतना मोहक था कि उसे सुनकर जिन लोगों को दरबार में आमंत्रित किया गया था वे सब मानो जादू के असर में बाहर ही रह गये और दरबार की हाज़िरी भूल गये। अपने आश्रयदाता रामपुर के नवाब रज़ा अली खाँ के बारे में थिरकवा कहा करते थे, "अपने संरक्षक से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरी खूब पटी। नवाब साहब मेरे प्रति सदैव कृपालु रहे और मैंने भी स्वामिभक्त बनकर उनकी सेवा की।" नवाव साहब जब अपने दोस्तों के मनोरंजनार्थ करताल (castanets) और घुँघरू वजाते थे, तो यह महान् उस्ताद कलाकार बड़े कायदे और अदब के साथ उनकी संगत करते थे।

नया माहौल

नये माहौल में जब सभी दरबारी संगीतज्ञों को हटा दिया गया, तो थिरकवा साहब लखनऊ चले आये और यहाँ भातखण्डे संगीत महाविद्यालय में वे तवले के प्रोफेसर एवं प्रधान शिक्षक नियुक्त हुए। संगीत महाविद्यालय से रिटायर होने के वाद भी सेवामुक्त प्राध्यापक के रूप में इस संस्था से उनका नज़दीकी रिश्ता वना रहा। रामपुर और उक्त संगीत महाविद्यालय की सेवा के वर्षों में वे आकाशवाणी के लखनऊ स्टेशन से अक्सर ब्राडकास्ट करने वाले एक अत्यन्त लोकप्रिय कलाकार रहे।

साथ ही देश भर की म्यूजिक कान्फ्रेंसों, आकाशवाणी के अखिल भारतीय संगीत-कार्यक्रमों, संगीत-सम्मेलनों और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महफिलों में निरन्तर उनकी माँग बनी रही। इनकी लोकप्रियता कभी कम न होने का राज़ यह था कि उन्होंने अपनी कठिन रियाज़ हमेशा जारी रखी और आखिर तक अपनी कला का स्तर ऊँचा रखा।

सन् १९७४ के रेडियो संगीत-सम्मेलन में उनका अन्तिम अविस्मरणीय कला-प्रदर्शन हुआ, जिसमें उन्होंने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि नब्बे वर्ष से ऊपर के वय में भी तबले के प्रति उनकी निष्ठा और तबलावादन पर उनके अधिकार की समता कोई नहीं कर सकता। सामान्य बातचीत में यद्यपि उनकी ज़बान हकलाने लगी थी लेकिन ताज्जुब तब होता था जब वे तबले के जटिल बोल और परनें सुनाने लगते थे, उस समय उनकी आवाज़ सधी हुई और सशक्त निकलती थी। उत्तर भारत में चारों तरफ उनके शागिर्द फैले हुए हैं, जिन्होंने यश प्राप्त किया है। उनमें से कुछ के नाम हैं—लालजी गोखले (आकाशवाणी, बम्बई), प्रेमवल्लभ और गुलाम अहमद (आकाशवाणी, दिल्ली), छोटे गोखले (आकाशवाणी, पुणे), निखिल घोष (बम्बई), अहमद अली और रामकुमार शर्मा (लखनऊ) आदि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थिरकवा साहब मूलतः एकलवादक (सोलोइस्ट) थे, किन्तु विगत ७ या ८ दशकों में कोई भी उच्चकोटि का गवैया अथवा वादक-कलाकार ऐसा न था, जिसकी संगत उन्होंने अपने सुप्रसिद्ध और लम्बे कलाकार-जीवन में न की हो। अविस्मरणीय उस्तादों में अल्ला बंदे खाँ, रजब अली खाँ, अल्ला दिया खाँ, वाहिद खाँ, अलाउद्दीन खाँ, भास्कर बुआ बखले, फैयाज़ खाँ, मुस्ताक हुसैन, हाफिज़ अली, अली अकवर, विस्मिल्ला खाँ, श्रीमती बेगम अख्तर, रहीमुद्दीन डागुर, गजाननराव जोशी, जोग आदि के साथ वे संगत कर चुके थे। एक वार मैं थिरकवा साहब से पूछ बैठी, कि "जिन गायकों के साथ आपने संगत की उनमें सबसे अधिक आपको किसके साथ मज़ा आया?" क्षण भर भी बिना हिचके उन्होंने उत्तर दिया—"मुझे सबसे ज्यादा खुशी आग़रा घराने के उस्ताद फैयाज़ खाँ, विलायत हुसैन और अब्दुल्ला खाँ के साथ संगत करने में हासिल हुई क्योंकि ताल पर उनका सर्वोपरि अधिकार है।" वास्तव में जिस तरह आफताबे मौशीकी के वे प्रशंसक थे, उसी भाँति फैयाज खाँ साहब भी उनकी तारीफ करते थे। इन दोनों में एक दूसरे को समझने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की पूर्ण समरसता थी, यहाँ तक कि एक म्यूज़िक कान्फ्रेंस में जब कोई दूसरा तबलावादक उस्ताद फैयाज़ खाँ के साथ संगत कर रहा था तो एक बार खीज कर उस्ताद ने कह ही डाला—"न हुआ थिरकवा" (थिरकवा की जगह कोई नहीं ले सकता)। "पद्मभूषण" और कई सम्मान कुदरती तौर पर उन्हें मिलने ही थे।

विनोदप्रियता

थिरकवा साहब के पास संस्मरणों का खजाना था। वे विनोदप्रिय थे। और बहुत से गायकों की नकल कर लेने की उनमें अपूर्व क्षमता थी। इसलिए वे पुरानी रंगीन महफिलों के मनोरंजक प्रसंग सुना कर हम लोगों को अक्सर आह्लादित करते रहते थे। तबला के बोलों को गाकर सुनाये बिना इस प्रकार के वर्णनों का प्रभाव बहुत कुछ कम हो जाता है। फिर भी एक किस्सा यूँ है—"शायद आप लोगों को देवास के रजब अली खाँ को सुनने का सौभाग्य कभी प्राप्त नहीं हुआ। वह एक अद्भुत गायक थे और अपनी "तैयारी" के लिए प्रसिद्ध थे। लेकिन द्रुत ख्याल की गति बढ़ाकर मक्कारी करने की उनमें एक आदत थी जिससे संगतकार गरीब तबलावादक को देर तक लम्बी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'तैयारी,' के दौरान रुका रहना पड़ता था, जबकि वह स्वयं सरलता से गाते चले जाते थे। एक दिन यह चाल उन्होंने मेरे साथ चली। मुझे भी इसी तरह की मक्कारी का एक दाँव समझ में आ गया। अतिद्रुत लय पर पसीना बहाने के बजाय मैंने वस्तुतः उनकी तानों के साथ गणित के आधार पर संगत करना शुरू किया। इस तरह मैं रात भर बिना थके तबला बजाता रह सकता था, लेकिन गवैया बहुत जल्द थक जाता। रजब अली खाँ ने इस पर नाराज़ न होकर मेरी तरकीब को पसंद किया और हम दोनों इस पर खूब हँसे।" थिरकवा साहब को इस बात का विश्वास था कि उनके कलात्मक व्यक्तित्व को कोई घटा नहीं सकता, अतः उन्होंने आजकल के किसी नये कलाकार के साथ संगत करने में उज्र नहीं की। यदि संयोजकों को कभी किसी नये कलाकार के साथ थिरकवा जैसे उत्तम कलाकार के नाम को सूची में रखने में संकोच हुआ तो वह हँस कर कहते थे, कि "यदि मैं चिंता नहीं करता, तो आपको क्यों फ़िक्र होती है?" जब कोई कलाकार उनके जैसे ऊँचे स्तर पर पहुँच जाता है तो संगीत में दंभ की इन छोटी बातों पर वह ध्यान नहीं देता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थिरकवा 'तवलाबाज', की सभी शैलियों जैसे दिल्ली, पूरब, फर्रुखावादी, अजराज सभी में दक्ष थे, किन्तु दिल्ली और फर्रुखाबादी शैलियाँ उन्हें विशेष प्रिय थीं। आजकल के तबला-शागिर्दों के लिए सफलता प्राप्त करने के उनके नुस्खे हैं—"सही और सच्चाई के साथ तालीम, वर्षों तक लगातार लम्बी रियाज, नियमित शारीरिक व्यायाम, और पर्याप्त मात्रा में बढ़िया पौष्टिक खाद्य।" उन्होंने स्वयं इन बातों के मूल्य अपनी व्यक्तिगत मिसाल पेश करके सिद्ध किये थे। वे जीवन भर सिर्फ इसलिए लोकप्रिय नहीं रहे कि वे अपने विषय के अधिकारी विद्वान थे, अपितु अपने शानदार और मिलनसार स्वभाव के कारण भी वे प्रतिष्ठित हुए थे। मुझे तो इस बात पर आश्चर्य होता है कि शीर्षस्थ कलाकार होते हुए भी वे कभी किसी सांस्कृतिक प्रतिनिधि-मंडल में भाग लेने स्वदेश के बाहर नहीं गये। अतः मैंने एक बार उनसे इस विषय में पूछा तो उन्होंने अपने ही ऊपर कहकहा लगाते हँस कर स्वीकार किया कि, "मुझे ऐसे अनेक अवसरों पर आमंत्रित किया गया; लेकिन हर बार मैंने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन्कार कर दिया क्योंकि हवाई जहाज में उड़ने से मुझे डर लगता है।"

पुरानी पीढ़ी के संगीतज्ञ और संगीत-प्रेमी आज हताश होकर अफसोस के साथ कहते हैं कि "बहुत से तबलिए आये और चले गये लेकिन 'थिरकवा' तो सिर्फ एक ही पैदा हुआ था।"

व्यक्तित्व

उस्ताद अहमद जान थिरकवा के 'दरबारी' व्यक्तित्व में शामिल थी काली 'अचकन' और 'टोपी', खिजाब लगी काली मूँछ और सुरमा की सलाई भँजी आँखें, चाँदी की मूठदार छड़ी, शिष्टता से भरी तर्ज में 'आदाब अर्ज' या 'मेहरबानी आपकी' और सर्वोपरि थी 'तबले पर उनकी निपुणता।'

अन्तिम यात्रा

तबला-बायाँ, थिरकवा की नृत्य करती उँगलियों से सदा-सदा के लिए वंचित हो गया, तबले का जादूगर ९८ वर्ष की आयु में, १३ जनवरी, १९७६ को सहसा गायब हो गया और यह भी एक संयोग था कि उनकी अन्तिम यात्रा उस दिन हुई जब 'मुहर्रम' के दसवें दिन 'अशरा' का मातम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मनाया जा रहा था! लखनऊ में उसके पहले दो दिनों की रौनक, भीड़भाड़ और रोशनी का माहौल समाप्त हो चुका था। उस दिन लखनऊ के संगीत-प्रेमियों को जब प्रातः काल १० बजे उस्ताद के अकस्मात् निधन का समाचार मिला, तो ताजिये दफनाने के सिलसिले में जुलूस निकल रहे थे। उसी समय मातम करती संगीत-प्रेमियों की भीड़ उन उस्ताद, जो विगत सात या आठ दशकों तक "तबला जादूगर" के रूप में देश भर में सबसे ज्यादा प्रतिष्ठित रहे—उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने जा रही थी।

लखनऊ से प्रेम

उनका वादा था कि "मैं हमेशा-हमेशा लखनऊ में रहूँगा", जिसे उन्होंने निभाकर दिखला दिया। लखनऊ में स्थायी रूप से बसने के बावजूद वह चंद साल पहले बम्बई चले गये थे, जहाँ वे निखिल घोष के 'स्कूल आफ म्यूज़िक' के न केवल प्रेरक थे बल्कि अभिनेय कलाओं के "नेशनल सेंटर" के विज़िटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य भी कर रहे थे। सन् १९७६ की आठ जनवरी को वे अपने घर लखनऊ आये थे और यहाँ से १३ जनवरी को बम्बई-मेल पकड़ने के लिए वे रिक्शा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वारा चारबाग-रेलवे स्टेशन जा रहे थे कि अकस्मात् रिक्शे पर ही इन्तकाल हो गया।

दो युगों के बीच

उस्ताद थिरकवा के निधन के साथ ही संगीत का दरबारी युग समाप्त हो गया और आज के तबलावादकों के बीच से सर्वश्रेष्ठ और सबसे रंगीन व्यक्तित्व उठ गया। यद्यपि उन्होंने अपने जीवन के सर्वोत्तम वर्ष बड़े ठाठ के साथ दरबार की शान-शौकत में व्यतीत किये थे, जहाँ कला और उसकी भावुकतापूर्ण परख की सबसे ज्यादा कद्र थी, फिर भी दरबार की आरामदेह ज़िंदगी से हट कर जब वे आधुनिक मशीन युग की चहल-पहल में आये, तो उसमें भी बड़ी शान के साथ उन्होंने प्रवेश किया। वास्तव में वे दो युगों की बीच की कड़ी थे।

—श्रीमती सुशीला मिश्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ यादें

"एक अच्छे कलाकार की कला महान् तभी हो सकती है जब कि वह एक अच्छा इन्सान हो।" परम्परा से चली आई इस मान्यता के अनुरूप थिरकवा साहब का जीवन सदैव एक आदर्श रहा। श्रमपूर्वक अभ्यास अर्थात् रियाज़ कलाकार को सिद्धहस्तता प्रदान करता है, किन्तु कला प्रभावोत्पादक है अथवा नहीं, यह कलाकार के व्यक्तित्व, उसके अपने मानवीय गुणों, उसकी 'रूह' पर निर्भर करता है। अन्यथा कला 'नटी का खेल' मात्र रह जाती है। ऐसे कम ही कलाकार हुए हैं जिनकी कला में ये दोनों चीज़ें सही अनुपात में पायी जायँ। थिरकवा साहब के तबले में उनके श्रम के साथ-साथ उनकी 'रूह' भी बोलती थी।

कर्म की महत्ता

"करम करे है तो सभी बात बने है और उसकी खुदा भी मदद करे है।"—थिरकवा ज़िन्दगी भर यह कहते सुने गये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और इस पर उन्होंने अमल भी किया। सर्दी-गर्मी, बरसात कोई भी थिरकवा के बारह-बारह घंटे के रियाज़ को कम नहीं कर पाये। वे कहा करते थे कि, "अगर इन्सान किसी भी काम को करने का अहद सच्चे दिल से कर ले और उसमें जुट जाये तो दुनिया में उसके लिए कुछ भी ग़ैरमुमकिन नहीं है।" तबले के प्रति एकाग्रता उनके रियाज़ का राज़ थी। रियाज़ उनका नियम नहीं, उनका धर्म था। वे कहा करते थे: "इन्सान कुछ पाने के लिए और फिर उस पायी हुई नियामत से ज़माने को सुख देने के लिए एक ही चीज़ पर तो रियाज़ कर सकता है। अल्लाह की मर्ज़ी थी कि मैं उसकी अता की हुई लय में थिरकूँ और ज़माने को उस थिरकन का सुख दूँ। फिर भला मेरी क्या हस्ती थी कि मैं उसकी मर्ज़ी के खिलाफ कोई दूसरा कदम उठा सकता।"

थिरकवा साहब के मित्र नृत्य-शास्त्री श्री मोहनराव कल्याणपुरकर के एक बार पूछने पर: "कि आपने अपना कोई ऐसा शागिर्द क्यों नहीं बनाया जो आपकी याद ताज़ा करता रहे?" उस्ताद ने मायूसी के साथ हँसते हुए कहा: "सब समझते हैं कि तबला मुझे विरासत में मिला है और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्हें भी मेरा शागिर्द होने पर विरासत में मिल जायेगा। गोया कि यह कोई ज़मीन-जायदाद है जो बिना मेहनत के विरासत में मिल जाये और फिर ठाठ होंगे। अल्लाह वग़ैर मेहनत कराये कुछ नहीं देता चाहे वह फक़ीरी हो या कोई इल्म !"

एकल वादन

तबले ने अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व थिरकवा साहब के ज़माने में ही प्राप्त किया। उसके पहले तबला मात्र संगत के लिए ही उपयोग में आता था। तबले के एकल-कार्यक्रम थिरकवा साहब के समय में ही लोकप्रिय हुए। लखनऊ से बाहर भी जब-जब उनके कार्यक्रम हुए, श्रोता दूर-दूर से उन्हें सुनने आये। पूना में आयोजित कार्यक्रमों को सुनने श्रोता हुबली, बम्बई और कोल्हापुर से आया करते थे। उनके 'बाज' की विशेषता पर श्री कल्याणपुरकर कहते हैं : "वे तबले पर बोल इतने स्पष्ट निकालते थे जैसे कोई कंठ से बोल पढ़ रहा हो। उनका 'धा' ऐसा बजता था कि यह कहना कठिन होता था कि यह बोल बायें पर निकला है या दाहिने पर। इतना संतुलन होता था कि दोनों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्वनियों में 'धे-धे' बजाते समय वे न तो कलाई पर ज़ोर देते थे, न तवले पर कलाई घिसती थी। बस हलकी सी जुम्बिश के साथ ये बोल इस प्रकार से निकलते थे जैसे एक निर्जीव चीज से नहीं बल्कि मानव कंठ से निकल रहे हों।" बोलों की उड़ान लेते समय बायें की गूँज टूटती नहीं थी, पूरे वादन में एक तारतम्यता रहती थी। विलम्बित हो या द्रुत, 'नाद' नही टूटता था बल्कि गूँज का एक प्रवाह बहता रहता था। श्री भारतेंदु वाजपेयी के अनुसार तबले के उस्ताद हाजी विलायत खाँ के शागिर्द मियाँ सलारी खाँ के तबले के चलन को थिरकवा साहब अन्य किसी कलाकार की अपेक्षा बहुत सिद्धहस्तता के साथ पेश करते थे। वे ढोलक की लग्गियों की रविश को फर्रुखावादी ढंग से 'तरकिट-धिरकिट' में और लय में बहुत खूबसूरती से सजाते थे। उनके 'धातिर धिड़नग तिगनग' के रेले के उड़ान की चलन जिन्होंने भी सुनी वे उसे सहज ही भुला नहीं सकते। भातखंडे संगीत विद्यालय के सहायक प्राध्यापक श्री प्रेमसिंह किनोत, खाँ साहब के तबले मिलाने के ढंग के विषय में, कहते हैं : "कि जिस तरह सधे हुए हाथ से वे तबले के बोल निकालते थे, उसी तरह तबले के गजरे या गट्टे पर हथौड़ी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की चोट से, नपे-तुले हाथ की एक बार की चोट के बाद उसी स्थान पर दुबारा चोट करने की जरूरत नहीं होती थी। तबला अपने स्वर में आ जाता था।"

लय और स्वर

लय से निरंतर खेलते रहने वाले 'थिरकवा' की पकड़ समय पर ही नहीं, स्वर पर भी थी। उन्हें सैकड़ों बन्दिशें याद थीं जो उनके वालिद हुसैन बख्श खाँ (सारंगी वादक), नाना तथा मामा मिट्ठू खाँ (सारंगी वादक) की देन थी। ठुमरी और दादरा गाते समय उनका बोल-बनाव किसी सिद्धहस्त गायक से कम न होता था। एक बार नवाब रामपुर के जन्म-दिवस पर आयोजित संगीत-कार्यक्रम में प्रसिद्ध संगीतज्ञ आमंत्रित थे। सुबह के वक्त एक मशहूर गायिका गाने बैठी। मधुर कंठ तथा स्वरों की उम्दा फिरत ने वातावरण को संगीतमय बना दिया किंतु गायिका बहुत देर तक स्थाई गाती रही। ज़िन्दगी भर रिद्म और अनुपात में जीने वाले थिरकवा साहब को गायिका द्वारा ज़रूरत से ज़्यादा वक्त 'स्थाई' को देने में असुविधा मससूस हुई। वे बोल पड़े: "अब 'अन्तरा' भी तो गाइये।" गायिका आहिस्ता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से बोली : "खाँ साहब, इसमें अन्तरा नहीं हैं।" तव खाँ साहब मुस्कराये और कहा : "वग़ैर अन्तरे के तो 'स्थाई' नहीं होती। आप अन्तरा भी याद कर लीजिए और शुरू हो जाइये।" सारी महफ़िल आश्चर्यचकित थी तवले के जादूगर को स्वरों में जान डालते देखकर। लोग तबला-नवाज उस्ताद अहमद जान थिरकवा खाँ का गाना सुन रहे थे और झूम रहे थे।

गायक की भूमिका

थिरकवा खाँ साहब के ज़माने में 'श्रुतिमंडल' लखनऊ की एक सक्रिय संस्था थी और उसके सक्रिय सदस्य थे श्री गोविन्द नारायण नाटू तथा श्री प्रेमसिंह किनोत। स्नेहवश खाँ साहब इस संस्था के कार्यक्रमों में अक्सर हिस्सा लेते थे। इसी संस्था द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में एक बार खाँ साहब अचानक अपने मित्र पं० हरिशंकर मिश्र और श्री विक्रम सिंह के साथ पहुँच गये और प्रेमसिंह किनोत से कहा "बेटे आज मैं गाऊँगा और पं० हरिशंकर तवला वजायेंगे। तानपुरा लेकर तुम बैठो।" उस रात खाँ साहब ने सबसे पहले राग मालकौन्स में एक ख्याल गाया और उसके बाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अड़ाणा में धमार—"काल तुम हाहाकर छूटे"। उस दिन प्रसिद्ध गायक पं० हरिशंकर मिश्र तबला-संगतकार थे और तबलानवाज थिरकवा खाँ गायक की भूमिका अदा कर रहे थे। किसी तरह का दंभ इन दोनों कलाकारों के बीच नहीं था।

कला का प्रभाव

श्री मोहनराव कल्याणपुरकर के शब्दों में पंजाब के 'विष्णु दिगम्बर पलुस्कर संगीत विद्यालय' में एक जलसा था। वहाँ की परम्परा के अनुसार गायक के साथ चार तबला-वादक संगत करने बैठा करते थे। मशहूर गायक भास्कर बुवा जिन्हें 'बकले बुवा' कहा जाता था, गाने बैठे। उनके साथ भी चार तबला वादक बैठे जिनमें थिरकवा साहब भी थे। बकले बुवा ने थिरकवा साहब को देखा तो मुस्कराये और कहा "थिरकवा साहब के होते हुए, चार की क्या ज़रूरत है?" इसी जलसे में श्री बाल गंधर्व भी थे। वे थिरकवा साहब के तबला-वादन से बहुत प्रभावित हुए। बाल गंधर्व उस ज़माने में (लगभग १९२० में) एक नाटक कम्पनी चलाते थे। उन्होंने थिरकवा साहब को अपनी कम्पनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में तबला-वादक के रूप में २५०-०० रुपया माहवार पर काम करने के लिए आमंत्रित किया। यह राशि उस समय को देखते हुए काफी बड़ी थी।

स्नेह-बंधन

थिरकवा साहब के अपने समकालीन संगीतज्ञों से बहुत अच्छे स्नेह-सम्बन्ध थे। उन्हें उन संगीतज्ञों का आदर और प्रेम मिला था। आफताब-ए-मौशीकी उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब थिरकवा साहब के बहुत निकट थे। जब भी थिरकवा साहब का साथ उन्हें मिलता वे उन्हें छोड़ना नहीं चाहते। एक बार बड़ौदा में उस्ताद फैयाज़ खाँ साहब के साथ थिरकवा साहब दस दिन तक रुके। संगीत-गोष्ठियाँ हुईं। दस दिन बाद भी आफताब-ए-मौशीकी उन्हें जाने नहीं देना चाहते थे जबकि थिरकवा साहब को किसी आवश्यक कार्य-वश जाना ज़रूरी था। एक दिन अचानक महाराजा बड़ौदा के यहाँ से फैयाज़ खाँ साहब का बुलावा आ गया। फैयाज़ खाँ साहब वहाँ दरबार गये और यहाँ थिरकवा साहब बिस्तर बाँध अपने शागिर्द के साथ चुपके से रवाना हो गये। फैयाज़ खाँ साहब घर आने पर बहुत मायूस हुए। कुछ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिनों बाद जब वे थिरकवा साहब से संगीत-सम्मेलन में मिले तो बोले, "अरे मियाँ, घर से चुपके से तो भाग आये मगर मेरी चीज़ क्यों चुरा लाये ?" थिरकवा साहब ने आश्चर्य के साथ कहा, "क्या कहते हो, क्या मैं चोरी करूंगा और वो भी अपने घर में" ; तब फैयाज़ साहब ने मुस्करा कर कहा, "क्यों नहीं, तुम जो मेरे स्वरों का चैन चुरा लाये हो, क्या वो कुछ नहीं ?"

उदारता

इतने मान-सम्मान और स्नेह पाने के बावजूद वह कलाकार हमेशा 'ज़ौक' के इस शेर का कायल रहा और हमेशा इसे गुनगुनाता रहा

"ऐ ज़ौक किसको चश्म-ए-हिकारत से देखिये,
सब हमसे हैं ज्यादह, कोई हमसे कम नहीं ।"

अपने समकक्ष और समकालीन कलाकारों को उन्होंने हमेशा आदर दिया । दिल्ली घराने के खलीफा नत्थू खाँ उस ज़माने के प्रसिद्ध तबला-वादक थे । नत्थू खाँ साहब को दिल्ली में खोज पाना और उनसे मिलना एक कठिन कार्य समझा जाता था । थिरकवा साहब नत्थू खाँ खलीफ़ा के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रति आदर रखते थे। वे जब भी दिल्ली जाते, खलीफा से मिलने का रास्ता निकाल लेते थे। वे संगीत-गोष्ठियों में हिस्सा लेते और वहाँ पर तबला-वादकों में आतंक फैल जाता था। "कौन थिरकवा से टक्कर ले ?" तब खलीफा नत्थू खाँ तक दिल्ली के तबला-वादकों की फरियाद पहुँचती और नत्थू खाँ खलीफा यह कहते "कि चल देखूँ तो थिरकवा क्या बजाता है ?" फिर थिरकवा साहब को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते खुद ही सामने आ जाते थे। खलीफा नत्थू खाँ के पहुँचते ही थिरकवा साहब विनम्र हो उनसे कह बैठते : "भला मैं आपके सामने क्या बजा सकता हूँ। आपका दीदार हासिल करना था इसलिए.....।"

श्री प्रेमसिंह किनोत के अनुसार 'श्रुतिमंडल' ने जब-जब थिरकवा साहब को याद किया, उन्हें अपने बीच पाया। वे बिना किसी आडम्बर और अहंकार के छात्रों के साथ तबला लेकर संगत करने बैठ जाते थे और उनकी कमज़ोरियों को उजागर न होने देकर उन्हें सम्हालते हुए उनकी संगत करते थे। छात्रों का मनोबल इससे दुगना हो जाता था।

तहज़ीब और लिबास

शेरवानी, चूड़ीदार पैजामा पहने—पैरों में कामदार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नागरा, हाथ में छड़ी और सिर पर रामपुरी टोपी के साथ जब एक खास लखनवी अन्दाज़ में थिरकवा साहब चलते तो लखनऊ की संस्कृति साकार हो उठती। अपनी शाइस्ता ज़बान और संजीदा लहज़े में जब भी वह कोई बात कहते—लखनऊ की तहजीब उजागर हो उठती। उन्हें लखनऊ नगर, इसकी संस्कृति और यहाँ की आब-ओ-हवा से बेहद लगाव था। खाँ साहब की दो ही ख्वाहिशें थीं। वे हमेशा कहा करते थे: "खुदा से मेरी इल्तजा है कि वे मुझे लखनऊ से ही अपने दरबार में बुलायें।" और "या खुदा जब तक मेरे हाथ-पैर चलते रहें मैं तबला बजाता रहूँ।" और उनकी दोनों ही ख्वाहिशें पूरी हुईं।

सम्मान

जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाले यह कलाकार अपनी कला और अपनी विनम्रताओं से हर दिल-अज़ीज कलाकार बन गये। स्वतंत्रता से पहले जहाँ थिरकवा साहब ने नवाबों और राजदरबारों से सम्मान प्राप्त किया वहाँ स्वतंत्र भारत की संगीत संस्थाओं तथा भारत सरकार द्वारा भी वे सम्मानित किये गये, किंतु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्होंने अपनी महानता के अनुरूप अपनी विनम्रता नहीं त्यागी। दिसम्बर, सन् १९७० की एक सुबह जब थिरकवा साहब को तार से भारत सरकार द्वारा 'पद्मभूषण' से अलंकृत किये जाने की सूचना मिली तो खाँ साहब सुनते ही खड़े हो गये और आसमान की ओर देखकर बोले,

"वह तू इज्ज़ोमनतुशह, वह तू जिल्लतो मनतुशह।"

—अश्विनी कुमार द्विवेदी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi